॥नवनागस्तोत्रं॥

श्री गणेशाय नमः।

अनन्तं वासुकिं शेषं पद्मनाभं च कम्बलम्।
शङ्खपालं धृतराष्ट्रं तक्षकं कालियं तथा॥१॥
एतानि नव नामानि नागानां च महात्मनाम्।
सायंकाले पठेन्नित्यं प्रातःकाले विशेषतः॥२॥
तस्य विषभयं नास्ति सर्वत्र विजयी भवेत्।

॥इति श्री नवनागस्तोत्रं सम्पूर्णं॥

हम उन ऋषि-मुनियों, भक्तगणों और अपने उन सभी पूर्वजों के प्रति कृतज्ञ होते हुए उन्हें नमस्कार करते हैं जिनके रचे हुए स्तोत्र पढ़ कर आज हम ईश्वर का सान्निध्य प्राप्त करने हेतु अथवा अपने तथा स्वजनों के कल्याण के लिए ईश्वर की स्तुति कर पाते हैं.